नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भरोसे से बढ़कर, रणनीतिक साझेदारी

फरवरी 2026 भारत-इज़राइल संबंधों के इतिहास में एक निर्णायक अध्याय के रूप में दर्ज हो चुका है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 25-26 फरवरी की इज़राइल यात्रा के दौरान द्विपक्षीय रिश्तों को 'शांति, नवाचार और समृद्धि के लिए विशेष रणनीतिक साझेदारी' के स्तर तक उन्नत किया जाना केवल कूटनीतिक औपचारिकता नहीं, बल्कि बदलती वैश्विक व्यवस्था में साझा दृष्टि का स्पष्ट उद्घोष है. कुल 16-17 प्रमुख समझौतों पर हस्ताक्षर इस बात का संकेत हैं कि दोनों देश अब लेन-देन के पारंपरिक ढांचे से निकलकर दीर्घकालिक सामरिक सहनिर्माण की दिशा में बढ़ चुके हैं.

रक्षा और सुरक्षा सहयोग इस यात्रा का सबसे सशक्त स्तंभ रहा. अब संबंध केवल हथियारों की खरीद तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि सह-विकास और सह-उत्पादन पर केंद्रित होंगे. उन्नत मिसाइल रक्षा प्रणाली जैसे आयरन डोम या आयरन बीम के भारतीय संस्करण, ड्रोन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित युद्ध प्रणालियों पर संभावित 10 अरब डॉलर के सौदे भारत की सुरक्षा संरचना को नई ऊंचाई देंगे. महत्वपूर्ण यह है कि तकनीक हस्तांतरण की प्रतिबद्धता भारत को आत्मनिर्भर रक्षा उत्पादन की दिशा में ठोस बढ़त देगी. आतंकवाद विरोधी सहयोग और खुफिया साझाकरण पर दोहराई गई प्रतिबद्धता ऐसे समय में अत्यंत प्रासंगिक है, जब वैश्विक अस्थिरता और गैर-राज्य कारकों की सक्रियता बढ़ रही है.

आर्थिक आयाम भी कम महत्वपूर्ण नहीं है. वित्त वर्ष 2024-25 में लगभग 3.62 अरब डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार, मुक्त व्यापार समझौते यानी एफटीए के बाद कहीं अधिक विस्तार पा सकता है. यदि 2026 के अंत तक एफटीए अंतिम रूप ले लेता है, तो व्यापारिक बाधाएं घटेंगी, निवेश प्रवाह बढ़ेगा और नवाचार आधारित उद्योगों को गति मिलेगी. इजराइल में यूपीआई की स्वीकार्यता सीमा-पार लेनदेन को सरल बनाएगी. यह डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के भारतीय मॉडल की वैश्विक स्वीकार्यता का प्रमाण है. अगले पांच वर्षों में 50 हजार अतिरिक्त भारतीय श्रमिकों की नियुक्ति का समझौता श्रमिक गतिशीलता और कौशल निर्यात को नई दिशा देगा.

उभरती प्रौद्योगिकियों में साझेदारी इस संबंध की वास्तविक दीर्घकालिक शक्ति है. कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसे क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान के लिए कोष बढ़ाया जाना दूरदर्शी कदम है. भारत में साइबर सुरक्षा उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना डिजिटल सुरक्षा ढांचे को सुदृढ़ करेगी. यह सहयोग केवल तकनीकी नहीं, बल्कि रणनीतिक भी है, क्योंकि भविष्य के युद्ध, अर्थव्यवस्था और शासन सभी डेटा और डिजिटल प्रणालियों पर आधारित होंगे. कृषि, जल प्रबंधन और समुद्री विरासत जैसे क्षेत्रों में समझौते यह दर्शाते हैं कि संबंध बहुस्तरीय हैं. भारत-इज़राइल नवाचार केंद्र के माध्यम से आधुनिक खेती और जल तकनीक का विस्तार भारतीय कृषि को अधिक उत्पादक और जल-संवेदनशील बनाएगा. लोथल में राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर का विकास सांस्कृतिक और आर्थिक संपर्क को ऐतिहासिक गहराई देगा. वहीं आईएमईसी और आई2यू2 जैसी बहुपक्षीय पहलों पर बल, भारत-इज़राइल साझेदारी को व्यापक क्षेत्रीय ढांचे से जोड़ता है.

स्पष्ट है कि यह संबंध अब केवल द्विपक्षीय नहीं, बल्कि वैश्विक परिप्रेक्ष्य में रणनीतिक संतुलन का हिस्सा है. भारत को इस साझेदारी से रक्षा आत्मनिर्भरता, तकनीकी उन्नति और आर्थिक विस्तार का अवसर मिलेगा, जबकि इज़राइल को विशाल बाजार, विश्वसनीय साझेदार और क्षेत्रीय स्थिरता का आधार. चुनौती यह होगी कि समझौतों को समयबद्ध क्रियान्वयन में बदला जाए. यदि ऐसा हुआ, तो फरवरी 2026 को भविष्य में उस क्षण के रूप में याद किया जाएगा, जब भारत और इज़राइल ने भरोसे को साझी शक्ति में रूपांतरित कर दिया.

विगत पांच वर्षों में अंतरिक्ष और विज्ञान के क्षेत्रों में जबर्दस्त प्रगति हुई

विज्ञान धरोहर की वाहक : नारी शक्ति

मेधा बाजपेयी

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस वह अवसर है जब हमें यह स्मरण करना चाहिए कि विकसित भारत के निर्माण में महिलाओं की वैज्ञानिक भागीदारी अत्यंत आवश्यक है. भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है, परंतु उच्च शोध और नेतृत्व पदों पर उनकी भागीदारी अभी भी अपेक्षाकृत कम है. यद्यपि गत 5 वर्षों में ही अनुसंधान संस्थानों, अंतरिक्ष कार्यक्रमों और चिकित्सा विज्ञान में महिलाओं ने उल्लेखनीय प्रगति हुई है.

जीवन में कई घटनाओं पर व्यक्ति का नियंत्रण नहीं होता है वह अनंतचेतना द्वारा नियंत्रित होती हैं.और कुछ ही ऐसी असाधारण प्रतिभा होती है जो ज्ञान को अपने चिंतन और सृजन शीलता से नए रंग में ढाल कर चिर कालिक कर देती है. रमन उनमे से ही हैं

केवल कुछ साल पहले तक शुगर के मरीजों को दिन में कई बार सुई चुभा कर रक्त शर्करा का परीक्षण करना पड़ता था लेकिन अब बिना ब्लड टेस्ट किये बाहर त्वचा से ही रोगी के कैंसर,ग्लुकोज, कोलेस्टरॉल, यूरिक अम्ल, को पहचान कर सटीक आकलन किया जा जा रहा है . ये होता है रक्त के रंग की पहचान से जिसे रमन स्पेक्ट्रम तकनीक से समझा जाता है. उपचार में रमन प्रभाव का उपयोग नॉन-इनवेसिव (बिना किसी सर्जरी या अंदरूनी उपकरणों) तकनीक के रूप में हो रहा है. . जब कोई खोज व आविष्कार मानव सभ्यता के लिये हितकर हो तब उसे अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व पर स्वीकार किया जाना नई पीढ़ी को प्रेरित करता है.

रमन प्रभाव एक ऐसी ही वैज्ञानिक खोज है, जिसे भारतीय भौतिक विज्ञानी चंद्रशेखर वेंकट रमन ने 1928 में किया था. यह शोध की दिशा की रोचक कहानी है. प्रसिद्ध भौतिकशास्त्री सी. वी. रमन का जन्म 7 नवंबर, 1888 को तमिलनाडु के त्रिचिरापल्ली के एक सामान्य परिवार में हुआ. अपने प्रतिभा शाली बचपन जीते हुए स्नातकोत्तर पूर्ण करते ही एक समान्य युवा की तरह असिस्टेंट एकाउटेंट जनरल की सरकारी नौकरी प्राप्त कर कलकत्ते चले गए. यही वर्ष उनके विवाह का भी था और जीवन सामान्य गति से चलने लगा.

लेकिन रमन साधारण जीवन के लिए नहीं बने थे एक दिन कार्यालय से वापस आते समय रास्ते में एक साइन बोर्ड देखा, जिस पर लिखा था 'इंडियन अशोसिएशन फार कल्टीवेशन आफ़ साईंस. मानो उनकी जिंदगी को नई दिशा मिल गई . .वो तत्काल परिषद् कार्यालय में पहुँच गए. वहाँ पहुँच कर अपना परिचय दिया और परिषद् की प्रयोगशाला में प्रयोग करने की आज्ञा पा ली. भौतिक और गणित में शोध की रुचि के कारण अपनी अधिकारी की नौकरी छोड़ कर 1917 में कलकत्ता में प्रोफेसर पद को स्वीकार किया था. उस समय वो भारतीय वाद्य यंत्र और उसकी ध्वनि के विज्ञान पर शोध कर रहे थे. पाश्चात्य और भारतीय वाद्ययंत्र पर उनका अध्ययन चल रहा था. उनका परिवार संगीत में पारंगत था पिता चन्द्रशेखर अय्यर वायलिन वादक थे, पत्नि लोकसुंदरी अम्मल वीणा बजाने में सिद्ध हस्त थी ,माँ पार्वती संस्कृत की जानकार थीं, और रमन स्वयं मृदंगम बजाते थे. संगीत ,संस्कृत और वाद्ययंत्रों के विज्ञान पर भारतीय ज्ञान परंपराओं और वाद्ययंत्र पर अपनी आस्था रखते हुए उनके शोध चल रहे थे.

> आज रमन प्रभाव का उपयोग कई जगह पर हो रहा है.भारत से अंतरिक्ष मिशन चंद्रयान ने चांद पर पानी होने की घोषणा की गई तो इसके पीछे रमन स्पैक्ट्रोस्कोपी का ही कमाल था. यह दिन भारतीय वैज्ञानिकों के महान योगदान और उनके कार्यों को सम्मानित करने के लिए मनाया जाता है. खासतौर पर, इस दिन को सर सी.वी. रमन की रमन प्रभाव की खोज के लिए याद किया जाता है. विज्ञान में महिलाएँ थीम के साथ 2026 में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जायेगा.

वायलिन की ध्वनि और विभिन्न ढोलकों की ध्वनि पर उनका शोधपत्र विश्व की प्रमुख विज्ञान पत्रिका नेचर में छपा. पुन: तार वाले वाद्ययंत्रों पर उनका शोध 1921 में प्रकाशित हुआ, जिसमें वीणा और तानपुरा का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया था. ये शोध पत्र इतने रोचक और प्रामाणिक थे की 1926 में जर्मनी में विज्ञान के विश्वकोष के प्रकाशन की योजना बनी, तो उस विश्वकोष में' वाद्य यंत्रों की भौतिकी' के शीर्षक से लेखन के लिए एकमात्र गैर-यूरोपीय श्री रमन को आमंत्रित किया गया. लंदन में ब्रिटिश राष्ट्रमंडल के विश्वविद्यालयों के कांग्रेस में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिये सी. वी. रमन 1921 में ब्रिटेन के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय आमंत्रित किया गया. यह यात्रा उनके जीवन में एक नया मोड़ लाने वाली यात्रा साबित हुई. जहाज की यात्रा ने लगातार चिंतन करने का समय दिया वे सागर के नीले रंग व आकाश के नीले रंग को लेकर सोचने लगे कि इनका रंग नीला ही क्यों है? इससे पूर्व वैज्ञानिकों की मान्यता थी आकाश का प्रतिबिम्ब पानी पर पड़ता है इसलिए सागर भी नीला दिखता है . पर रमन इस व्याख्या से संतुष्ट नहीं थे.

(लेखक शिक्षाविद एवं स्तंभकार हैं.)

काशी में खेली जाती है चिता भस्म की होली

प्रो. विवेकानंद तिवारी
अध्यक्ष, आम्बेडकर पीठ
एचपीयू ,शिमला

काशी में 27 धार्मिक संप्रदाय के लोग एक साथ रहते हैं. यह सहअस्तित्व का शहर है जहां लोग मृत्यु के लिए जीते हैं. बनारस में योग्य मृत्यु की तलाश हर धर्म के लोगों को आकर्षित करती है. काशी' की प्रसिद्धि का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष जिसके कारण असंख्य लोगों का वहाँ ताँता लगा रहता है, वह है इसका 'मोक्षप्रदायिनी' स्वरूप. तथ्यों के अनुसार काशी के 'मणिकर्णिका' और 'हरिशचंद्र' घाट पर प्रति वर्ष लगभग 30,000 शवों का दाह संस्कार किया जाता है. ऐसी मान्यता है, जिस भी व्यक्ति की मृत्यु वाराणसी में होती है, वह जीवन-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है. इसी कारण से इतिहास के पृष्ठों में काशी का वर्णन 'अविमुक्त क्षेत्र', 'महाशमशान', 'मुक्ति-भूमि' आदि नामों से भी मिलता है. स्कंदपुराण (4/1/12) में उल्लिखित है कि काशी जगत की सीमाओं में बंधी होने के बावजूद भी सभी के बंधन काटने वाली है- '...या बुद्धा भुवि मुक्तिदा स्युरमृतं यस्यां मृता जन्तव:' अर्थात् काशी मोक्ष प्रदायिनी है.

वाराणसी (काशी) में शव यात्रा को 'अंतिम यात्रा' या 'राम नाम सत्य है' के घोष के साथ एक मंगलमय यात्रा माना जाता है, जहाँ मोक्ष की मान्यता के कारण लोग दुखी होने के बजाय ईश्वर का नाम लेते हुए शव को विदा करते हैं. चूँकि यह अंतिम विदाई एक बेहतर गंतव्य (स्वर्ग/मोक्ष) की ओर मानी जाती है, इसलिए माहौल में अनजाना सा संतोष रहता हैयह पवित्र नगरी मोक्षदायिनी मानी जाती है, जहाँ मृत्यु को जीवन का अंत नहीं, बल्कि बाबा विश्वनाथ के धाम में अंतिम मुक्ति माना जाता है. काशी की मसान होली रंगों से नहीं,बल्कि चिता की भस्म से मनाई जाती है, जो जीवन की नश्वरता और मुक्ति का प्रतीक है. यह परंपरा भगवान शिव की नगरी में विशेष रूप से श्मशान घाट पर आयोजित होती है और मृत्यु के बीच जीवन के उत्सव का संदेश देती है. इस अनोखे आयोजन में आध्यात्म, आस्था और दर्शन का अद्भुत संगम देखने को मिलता है.

दुनिया में जहां होली को रंगों, गुलाल और उमंग के उत्सव के रूप में जाना जाता है, वहीं वाराणसी यानी काशी में यह पर्व एक बिल्कुल अलग और अद्भुत रूप में दिखाई देता है. यहां पारंपरिक रंगों की जगह श्मशान की चिता की भस्म से होली खेली जाती है, जिसे 'मसान होली' कहा जाता है. यह अनोखी परंपरा काशी को अन्य सभी स्थानों से अलग पहचान देती है और इसे देखने के लिए देश, विदेश से लोग पहुंचते हैं.

मसान होली केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि गहरे आध्यात्मिक अर्थों से जुड़ी परंपरा है, जिसका संबंध सीधे भगवान शिव से माना जाता है. शिव, जो श्मशान वासी और वैराग्य के प्रतीक हैं, उनकी नगरी में जीवन और मृत्यु के इस अद्भुत संगम के माध्यम से यह संदेश दिया जाता है कि मृत्यु अंत नहीं, बल्कि मुक्ति का मार्ग है. राख उड़ाकर मनुष्य को जीवन की नश्वरता और आत्मा की अमरता का बोध कराया जाता है,यही काशी की मसान होली का गूढ़ रहस्य है. मसान होली खासतौर पर मणिकर्णिका घाट और हरिश्चंद्र घाट पर यह परंपरा देखने को मिलती है. यहां अघोरी, साधु-संत और शिव भक्त चिता की भस्म को शरीर पर लगाकर और हवा में उड़ाकर होली खेलते हैं. ढोल-नगाड़ों की धुन, तांडव की झलक और ''हर हर महादेव'' के जयकारे इस माहौल को अलौकिक बना देते हैं. मसान होली का सीधा संबंध भगवान शिव से जोड़ा जाता है. भगवान शिव को 'महाकाल' और 'श्मशानवासी' कहा जाता है, जिन्हें भस्म अत्यंत प्रिय है. मान्यता है कि काशी में स्वयं भगवान शिव का निवास है और यहां मृत्यु भी मोक्ष का द्वार मानी जाती है. इसलिए यहां जीवन के अंत (मृत्यु) को भी उत्सव की तरह स्वीकार किया जाता है. इस परंपरा की शुरुआत को लेकर कई मान्यताएं प्रचलित हैं. मान्यता के अनुसार, काशी में मसान होली की परंपरा बहुत प्राचीन है और इसकी शुरुआत स्वयं भगवान शिव से जुड़ी मानी जाती है. कहा जाता है कि विवाह के बाद जब भगवान शिव पहली बार काशी पहुंचे थें, तब नगरवासियों ने उत्साह में रंगों से उनका स्वागत किया था और होली जैसा माहौल बना दिया था. धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक, उस समय देवी-देवता तो इस उत्सव में शामिल हुए थे, लेकिन शिव के प्रिय गण जैसे भूत-प्रेत, यक्ष और गंधर्व, इस खुशी से दूर रह गए. यह बात भगवान शिव को अच्छी नहीं लगी थी, क्योंकि वे अपने हर भक्त को समान मानते हैं.

ट्रंप के बयानों पर किसे विश्वास!

अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप के दावों में कितनी सच्चाई है और कौन उनकी हवा-हवाई बातों को गंभीरता से लेकर उनकी पुष्टि करता है? शायद कोई भी नहीं! ट्रंप ने फिर अपने इस दावे को दोहराया कि अपने शुरू के 10 महीनों में उन्होंने 8 युद्ध रुकवाए जिनमें भारत-पाकिस्तान युद्ध भी शामिल था. ट्रंप ने अमेरिकी कांग्रेस की संयुक्त बैठक में 90 मिनट भाषण दिया जिसमें उन्होंने कहा कि भारत व पाकिस्तान के बीच परमाणु युद्ध होने जा रहा था, जिसमें पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ सहित 35 करोड़ लोग मारे जाते. ट्रंप ने दावा किया कि उनके हस्तक्षेप से यह भयानक आपदा टल गई. उनके इस बयान का अब तक किसी ने खंडन नहीं किया. कोई उन्हें झूठा करार दे तो वह टैरिफ बढ़ा देंगे इसलिए कोई उनके मुंह नहीं लगता. भारत की नीति परमाणु शस्त्रों के मामले में नो फर्स्ट यूज (पहले इस्तेमाल नहीं) की रही है. यह संयमित नीति है कि हम अपनी ओर से एटमी हमले की पहल नहीं करेंगे, लेकिन यदि दुश्मन ने ऐसा दुस्साहस किया तो उसका सफाया करने से पीछे नहीं हटेंगे. भारत एक बेहद जिम्मेदार देश है जिसने परमाणु शक्ति का शांतिपूर्ण इस्तेमाल किया है. इसके विपरीत पाकिस्तान ने लापरवाही बरती तो उसकी एटमी ताकत किसी फौजी जनरल या आतंकी संगठन के पास जा सकती है. जब भारत ने पहलगाम में पर्यटकों की हत्या के बाद पाक को सबक सिखाने के लिए ऑपरेशन सिंदूर किया तो उसका सीमित और अचूक लक्ष्य पाकिस्तान के आतंकी ठिकाने थे जिन्हें नेस्तनाबूद कर दिया गया. पाकिस्तान के किसी नेता या नागरिक आबादी को निशाना बनाना हमारा उद्देश्य बिल्कुल भी नहीं था फिर ट्रंप ऐसा क्यों कह रहे हैं कि वह बीच में पड़कर युद्ध नहीं रुकवाते तो प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ मारे जाते. लगता है कि ऐसा दावा कर वह पाकिस्तानी पीएम पर एहसान जताना चाहते हैं कि देखो भारत तो तुमको मार देता, मैंने ऐन वक्त पर युद्ध रुकवाकर तुम्हारी जान बचाई. ट्रंप ने ईरान पर संभावित हमले की धमकी दी है, लेकिन वह जानते हैं कि ईरान कमजोर नहीं है. अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट के विपरीत फैसले के बाद भी ट्रंप टैरिफ बढ़ाने को सही ठहरा रहे हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

कांग्रेस का धंधा हुआ मंदा बीजेपी को भारी चुनावी चंदा

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, बीजेपी बलशाली पार्टी है जिसे 2024-25 में 6,088 करोड़ रुपये चंदा मिला. यह रकम कांग्रेस को मिले चंदे से 12 गुना है. बीजेपी को हाथ फैलाकर चंदा मांगने नहीं जाना पड़ता. वह खुद ही उसकी झोली में आ टपकता है. बीजेपी के शीर्ष 30 दानदाताओं में देश की कई बड़ी कंपनियों का समावेश है.'

हमने कहा, 'इसका मतलब है कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा इलेक्टोरल बॉन्ड योजना रद्द किए जाने पर भी बीजेपी को कोई फर्क नहीं पड़ा. उसका चंदा ऐसा है जिसे कोई ग्रहण नहीं लगता. चंदा देने वाली कंपनियां या उद्योग अपने लिए सरकार की अनुकंपा चाहते हैं ताकि वे और अधिक फूलें-फलें. बिना मतलब के कोई चंदा नहीं देता. सत्ता में जो भी पार्टी रहे, वह खुशहाल और मालामाल हो जाती है. कांग्रेस अदाणी और अंबानी का नाम लेकर कितना ही चिल्लाती रहे, कोई असर नहीं पड़ता. रिश्तों की गहराई और अभिन्नता बढ़ती ही चली जाती है. देश का विकास

पूंजीपति ही करेंगे, कोई टुटपुंजिया नहीं! सीधा आदान-प्रदान है. तुम मुझे चंदा दो मैं तुम्हे एयरपोर्ट, बंदरगाह और न जाने क्या-क्या बनाने के लिए जमीन और सुविधाएं दूंगा. इसे कहते हैं- इस हाथ दे, उस हाथ ले. बीजेपी की हालत यह है कि मांगे बिन मोती मिलें ! चुनावी चंदा हमेशा बढ़ता है जबकि आसमान का चंदा पूर्णिमा से अमावस के बीच घटता चला जाता है. जिन पार्टियों को बहुत कम चंदा मिलता है, वह लापता होने लगती हैं. पूंजीपतियों को पानी पी-पीकर कोसने वाले कम्युनिस्ट किस तरह नष्ट हुए, आपने देखा ही है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, लोकतंत्र की लिमोजीन कार धनरूपी ईंधन से ही चलती है. नेतागिरी में निवेश करने वाले मालदार बन जाते हैं. न उन्हें महंगाई दूर करनी है, न किसी को नौकरी-रोजगार देना है. चुनाव के पहले रेवड़ी रूपी खैरात की बरसात करके वोट ले लो और फिर जनता को अगले 5 वर्ष के लिए भूल जाओ. बच्चे को आकाश का चंदा दिखाकर और मतदाता को चंद लुभावने वादे कर बहलाया जाता है. विपक्ष हर बार हताश से हाथ मलता रह जाता है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12184
- डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3		4	■	5
6		■		■	7		
	■	8				■	
9	10			■	■	11	
■	12		■	13	14	■	■
15		■	16				17
	■	■	18			■	
19					■	20	

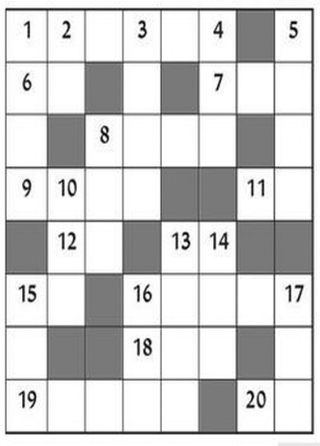

ऊपर से नीचे
1. आल्हा ऊदल का चचेरा भाई 2. वणिक, साहू 3. तर्पण, प्रेत को तिलांजलि देना 4. सिक्ख संप्रदाय के संस्थापक महात्मा 5. सलाह, मंत्रणा 8. स्वच्छ, पवित्र, निर्मल 10. नील सिंधुवार का पौधा (सं.) 13. मालिक, देश का शासन करने वाली संस्था या सत्ता (उर्दू) 14. कामदेव, वसंत काल (सं.) 15. नि:संदेह, जरूर (उर्दू) 16. खड़ाऊ, जूता 17. एक प्रसिद्ध सुगंधित धवल द्रव्य

बाएं से दाएं
1. शवसाधना करना 6. श्रीराम के एक पुत्र का नाम 7. नाज, चोचला, 8. फाड़ने वाला, रौंदने वाला, विदारण करने वाला (सं.) 9. घरौंदा (उर्दू) 11. चौरस गच या सीमेंट से पक्की की हुई जमीन 12. हल के नीचे लगा हुआ लोहे का फल 13. समान, तुल्य 15. संगी, साथी 16. जिसके सामने और बीच में रहने पर भी उस ओर की वस्तु दिखाई दे सके 18. सौदा बेचने का स्थान 19. कहानी लिखने वाला 20. फासले पर, अंतर पर, जो समीप न हो

Solution 12183

आ	वि	र्भा	व	■	भा	र	त
रा	का	■	ल	स	ल	सा	ना
■	स	म	य	■	ना	त	■
प	■	नु	■	स	■	ल	घु
र	■	हा	व	भा	व	■	म
म	हा	र	त	■	र	ग	ड़
धा	र	■	न	■	दा	ग	ना
म	ना	ही	■	का	न	न	■

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में वाहन का सुख मिलेगा, शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता के योग हैं, कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी, वर्ष के मध्य में दिनचर्या में व्यवधान आयेगा, पारिवारिक समस्या में व्यस्तता रहेगी, अधिकारी के कोप का सामना करना होगा, मन व्यथित रहेगा, वर्ष के अन्त में धार्मिक कार्यो में सफलता मिलेगी, संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी, स्थिति सुधरेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को दिनचर्या में व्यवधान आयेगा, मन व्यथित रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को वाहन का सुख मिलेगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को धार्मिक कार्यो में सफलता मिलेगी, संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों का मन परेशान रह सकता है, अधिकारी से मतभेद बढ़ेंगे, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को व्यवसायिक मामलों में स्थिति सामान्य रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को शिक्षा आदि में लाभ होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक कार्यो में व्यस्तता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिये बालक का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. गौर वर्ण का लम्बा दुबला पतला बुद्धिमान एवं निर्भीक मन की बात दूसरों पर जल्दी प्रकट नहीं करेगा. इसके मित्रों की संख्या सीमित होगी. इंजीनियरिंग क्षेत्र में उन्नति करेगा. माता का भक्त होगा.

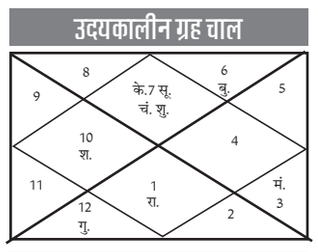

मेष- प्रभावशाली लोगों के संपर्क से लाभ मिलेगा. अधिक भरोसे में नुकसान हो सकता है. नवीन योजनाओं का विकास होगा. महिला जाति की सलाह उपयोगी रहेगी.

वृषभ- छोटी सी बात को लेकर विवाद की संभावना है. सावधानी रखें, धैर्य से काम लें. शत्रु वर्ग परास्त होगा. माता पिता की ओर से शुभ समाचार मिलेगा.

मिथुन- युवाओं को मेहनत का प्रतिफल मिलेगा. बच्चों को जोखिम के कार्य से दूर रखें. व्यवसायिक क्षेत्र में सफलता मिलेगी. महत्वपूर्ण कार्य की जवाबदारी बढ़ेगी.

कर्क- लापरवाही नुकसानदायी हो सकती है, नए प्रोजेक्ट को लेकर आप चिंतित रहेंगें. संतान की चिंता रहेगी. अनुकूल समय का लाभ मिलेगा.

सिंह- आप परिवार की खुशियों को लेकर लगातार प्रयासरत् रहेगें. मानसिक अस्थिरता रहेगी. व्यापार व्यवसाय अच्छा चलेगा. निजी दायित्वों की पूर्ति होगी.

कन्या- कैरिअर में अच्छे अवसर मिलेंगे कार्य स्थल पर अपनी जिम्मेदारियों से पीछे न हटें. आकस्मिक धन प्राप्ति का योग है. नवीन योजनाओं का शुभारम्भ होगा.

तुला- गिरते स्वास्थ्य के कारण आपकी कार्यक्षमता पर विपरीत अवसर पड़ेगा, जिससे कार्यों में देरी संभव है. किसी अनसोचे कार्य में व्यस्त रहना होगा.

वृश्चिक- धार्मिक कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिलेगा. यात्रा में सावधानी रखें. सोच समझकर कार्य करें. लाभदायक अवसरों की प्राप्ति होगी.

धनु- आप पारिवारिक मामलों के समाधान को लेकर चिंतित रहेंगे. वाकपटुता से काम बिगड़ सकता हैं पुराने मित्रों का सहयोग मिलेगा.

मकर- आपके व्यवहार में बदलाव से सहयोगी आश्चर्य में पड़ जायेगें. संपर्क क्षेत्र बढ़ेगा. आर्थिक कार्यों में सफलता के योग हैं. कुटुम्बियों का सहयोग मिलेगा.

कुम्भ- व्यवसायिक कार्यों के बीच तालमेल बैठाकर चलना होगा अन्यथा मुश्किल में पड़ जायेगें. बेरोजगारों को सफलता मिलेगी. कार्य बनेगा.

मीन- महत्वपूर्ण मामलों को टालने की बजाय शीघ्र निर्णय लें. अतिथि आगमन होगा. इष्टमित्रों का सहयोग मिलेगा. धर्म-कर्म, आध्यात्मिक कार्यों में रूचि रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

पंचांग

रा.मि. 09 संवत् 2082 फाल्गुन शुक्ल द्वादशी शनिवासरे रात 8/4, पुनर्वसु नक्षत्रे दिन 9/10, सौभाग्य योगे शाम 4/50, वव करणे सू.उ. 6/16, सू.अ. 5/44, चन्द्रचार कर्क, पर्व- गोविन्द द्वादशी, शु.रा. 4, 6,7,10,11,2 अ.रा. 5,8,9,12,1,3 शुभांक- 6,8,2.

व्यापार भविष्य

फाल्गुन शुक्ल द्वादशी को पुनर्वसु नक्षत्र के प्रभाव से चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, निकिल आदि वस्तुओं में नरमीं होगी. सरसों, अरंडी, मूंग, मोट के भाव में तेजी की चाल चलेगी. जीरा, धनियां, लालमिर्च के भाव में पूर्ववत् रहेंगे. भाग्यांक 1487 है.

SUDOKU 7316

	9				6			
	1					2		
5			7				3	
			4					6
		3				9		
4					8			
	7				9			8
		2					1	
			3				4	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-दोकू 7315

6	5	8	9	1	4	2	7	3
1	2	7	3	5	8	6	4	9
3	4	9	7	2	6	1	5	8
2	3	6	1	4	5	9	8	7
8	9	5	2	7	3	4	1	6
4	7	1	6	8	9	3	2	5
7	6	4	5	3	1	8	9	2
9	8	2	4	6	7	5	3	1
5	1	3	8	9	2	7	6	4